न्यूज़ टुडे

ICAR-राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान संस्थान (ICAR-NIAP) ने "भारतीय कृषि 2047 तक" शीर्षक से पॉलिसी पेपर जारी किया

इस पेपर में **पिछले छह दशकों में भारत की कृषि-खाद्य प्रणाली में हुए बदलावों** पर प्रकाश डाला गया है।

भारत की कृषि-खाद्य प्रणाली में संरचनात्मक बदलाव

- **खाद्य-अभाव से खाद्य-अधिशेष राष्ट्र तक का सफर:** यह हरित क्रांति, इनपुट सब्सिडी और न्यूनतम समर्थन मूल्य के कारण संभव हुआ है।
- **अर्थव्यवस्था में योगदान:** राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान **43% से घटकर 18%** हो गया है और कार्यबल में हिस्सेदारी धीरे-धीरे **74% से घटकर 46%** हो गई है।
- **खेतों का घटता आकार: सीमांत खेतों** (≤1 हेक्टेयर) का अनुपात **51% से बढ़कर 68%** हो गया है, तथा खेतों का **औसत आकार 2.28 हेक्टेयर** से घटकर **1.08 हेक्टेयर** हो गया है।
- **विविधीकरण:** कृषि सकल मूल्य वर्धित (GVA) में **पशुपालन और मत्स्य पालन** की हिस्सेदारी **2022-23 में बढ़कर क्रमशः 31% और 7%** हो गई थी।

कृषि-खाद्य प्रणाली संबंधी बदलावों के समक्ष चुनौतियां

- **कृषि भूमि में गिरावट:** इसके लिए जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण जिम्मेदार हैं।
- **उर्वरकों का असंतुलित उपयोग:** यह स्थिति सब्सिडी की अलग-अलग दरों, कम पोषक तत्व उपयोग दक्षता और क्षेत्रीय असमानताओं के कारण है।
- **अकुशल जल उपयोग:** इसमें भूजल का अत्यधिक दोहन और जल के उपयोग से संबंधित कम दक्षता शामिल हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु संबंधी चरम घटनाओं के कारण कृषि उत्पादकता वृद्धि में लगभग 25% की कमी आई है।
- **अन्य:** इसमें अविकसित बाजार, ऋण और मूल्य श्रृंखलाएं, अनाज-केंद्रित नीतियां आदि शामिल हैं।

कृषि-खाद्य प्रणाली में संधारणीय बदलावों हेतु सिफारिशें

- **जल प्रबंधन:** वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा देना चाहिए।
- **सुधार:** बिजली हेतु सब्सिडी को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना चाहिए, नैनो उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए तथा फसल चक्र, अंतर-फसली पद्धति जैसे संधारणीय तरीकों को अपनाना चाहिए।
- **अन्य:** कृषि अनुसंधान एवं विकास में निवेश करना चाहिए; कृषि बाजार से संबंधित अवसंरचना और मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना चाहिए; कृषि मूल्य नीति में सुधार आदि किया जाना चाहिए।

तेलंगाना अनुसूचित जाति में उप-वर्गीकरण लागू करने वाला पहला राज्य बन गया

तेलंगाना ने एक आधिकारिक अधिसूचना जारी कर **अनुसूचित जातियों (SC) में उप-वर्गीकरण** किया है। यह उप-वर्गीकरण **शिक्षा {अनुच्छेद 15(4)} और नियोजन {अनुच्छेद 16(4)}** दोनों में लागू होगा।

- यह निर्णय **सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ (पंजाब राज्य बनाम दविंदर सिंह, 2024)** द्वारा राज्यों को अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों को **उप-वर्गीकृत करने की अनुमति** देने के बाद आया है।
- **अनुसूचित जातियों का उप-वर्गीकरण:** इसका अर्थ है कि अनुसूचित जातियों में और भी ज्यादा पिछड़ी जातियों के लिए अलग से आरक्षण प्रदान किया जाएगा।

पंजाब राज्य बनाम दविंदर सिंह, 2024 में सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियां

- **संविधान के अनुच्छेद 341 और 342 के अंतर्गत जातियों, मूलवंशों या जनजातियों को सूचीबद्ध करना (बॉक्स देखें):** इससे **समरूप अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति वर्ग** नहीं बनते हैं, इसलिए **आंतरिक उप-वर्गीकरण** किया जा सकता है।
- **अनुच्छेद 14 और उप-वर्गीकरण:** कोर्ट ने उप-वर्गीकरण को बरकरार रखते हुए फैसला सुनाया (6:1) कि यह '**औपचारिक समानता**' की बजाए '**मौलिक समानता**' का एक पहलू है।
  - इस निर्णय ने **ई.वी. चिन्नैया बनाम आंध्र प्रदेश राज्य (2004) के फैसले को पलट** दिया, जिसने **उप-वर्गीकरण पर रोक लगा** दी थी।
- **उप-वर्गीकरण और राष्ट्रपति की सूची: उप-वर्गीकरण करते समय अनुच्छेद 341** के तहत **1950 की राष्ट्रपति की सूची** से जातियों को "**शामिल**" या "**हटाया**" नहीं जा सकता है। इसलिए, इससे मौजूदा सूची पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **इंद्रा साहनी और उप-वर्गीकरण:** इंद्रा साहनी वाद में उप-वर्गीकरण को स्पष्ट रूप से **OBCs तक सीमित** नहीं किया गया था।
- **उप-वर्गीकरण की न्यायिक समीक्षा:** राज्य अपनी **इच्छाओं या राजनीतिक हितों** के आधार पर उप-वर्गीकरण **नहीं** कर सकते। किसी भी राज्य द्वारा किया गया उप-वर्गीकरण **डेटा आधारित होना** चाहिए।

संवैधानिक प्रावधान

- **अनुच्छेद 341:** राष्ट्रपति, राज्यपाल से परामर्श करके, किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में जातियों, मूलवंशों या जनजातियों को **अनुसूचित जाति के रूप में सूचीबद्ध** कर सकता है।
- **अनुच्छेद 342:** राष्ट्रपति, राज्यपाल से परामर्श के बाद, किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में **जनजातियों या जनजातीय समुदायों को अनुसूचित जनजातियों के रूप में सूचीबद्ध** कर सकता है।

नए शोध से पता चला है कि भारतीय महाद्वीपीय प्लेट क्षैतिज रूप से विभाजित हो रही है

भारतीय महाद्वीपीय प्लेट एक प्रमुख टेक्टोनिक प्लेट है। इसकी सीमा चार प्रमुख प्लेट्स जैसे- **यूरेशियन प्लेट, अरेबियन प्लेट, अफ्रीकी प्लेट और ऑस्ट्रेलियाई प्लेट** से लगती है।

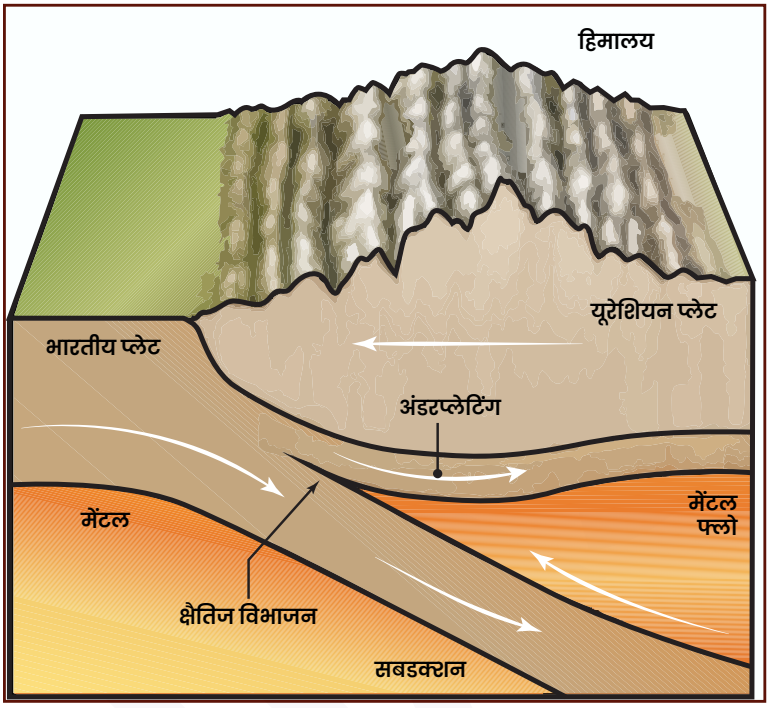

भारतीय प्लेट की गति

लगभग **60 मिलियन वर्ष पहले,** भारतीय महाद्वीपीय प्लेट उत्तर की ओर बढ़ने लगी थी तथा आज भी **यूरेशियन प्लेट** से अभिसरण कर रही है। इस अभिसरण की वजह से ही **तिब्बती पठार और हिमालय पर्वत श्रृंखला** का निर्माण हुआ।

- परंपरागत रूप से, निम्नलिखित दो सिद्धांत **तिब्बती पठार और हिमालय पर्वत की उत्पत्ति** का वर्णन करते हैं।
  - **अंडरप्लेटिंग:** जब भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट से टकराती (अभिसरण) है, तो अधिक घनत्व वाली भारतीय प्लेट का निचला हिस्सा तुलनात्मक रूप से कम घनत्व वाली यूरेशियन प्लेट के नीचे धंसने लगता है।
  - **सबडक्शन:** आमतौर पर जब दो टेक्टोनिक प्लेट्स टकराती हैं, तो भारी प्लेट हल्की प्लेट के नीचे धंस जाती है, इस प्रक्रिया को सबडक्शन कहते हैं।
    - महाद्वीपीय प्लेट्स का घनत्व महासागरीय प्लेट्स से कम और मोटाई अधिक होती है, इसलिए टकराने पर ये आसानी से मेंटल में क्षेपित या **सबडक्ट नहीं** होती है।
- हाल ही में, नए शोध ने एक तीसरा सिद्धांत प्रस्तावित किया है कि भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट के **नीचे धंसने के कारण प्लेट के भीतर क्षैतिज विभाजन** हो रहा है।
  - क्षैतिज विभाजन तब होता है, **जब प्लेट का सघन निचला भाग अलग हो जाता है और पृथ्वी की गर्म मेंटल में गहराई** तक चला जाता है।

IMF की 'वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट' में भू-राजनीतिक जोखिमों का वैश्विक वित्तीय स्थिरता पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन किया गया

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की इस रिपोर्ट के अनुसार, **वैश्विक भू-राजनीतिक जोखिमों का उच्च स्तर** बना हुआ है। इन जोखिमों के व्यापक **वित्तीय स्थिरता पर बढ़ते प्रभाव को लेकर चिंताएं** भी बढ़ रही हैं।

मुख्य भू-राजनीतिक जोखिम

- **आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करने वाले विविध जोखिम:** देशों के बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष, संसाधन प्राप्त करने की होड़, साइबर अटैक जैसी चुनौतियों के कारण वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हो सकती हैं।
- **वैश्विक शक्ति संतुलन, आर्थिक केंद्रों तथा व्यापार में व्यापक बदलाव:** नए व्यापारिक समूह बन रहे हैं और निवेश के नए केंद्र उभरकर सामने आ रहे हैं। इससे पारंपरिक वैश्विक शक्ति संतुलन में भी बदलाव देखा जा रहे है।
- **कर व्यवस्था में एकरूपता का अभाव:** उदाहरण के लिए, जहां एक ओर कई देश **मिनिमम ग्लोबल टैक्स** को अपना रहे हैं, तो दूसरी ओर कुछ देश **बहुपक्षीय टैक्स समझौतों से बाहर** निकल रहे हैं।
- **कार्यबल पर जनसांख्यिकीय, तकनीकी और सांस्कृतिक दबाव:** विकसित देशों की आबादी में जहां एक ओर **वृद्ध लोगों का अनुपात** और **सेवानिवृत्त होने वाले लोगों की जनसंख्या** बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर इन देशों में **जन्म दर कम** हो रही है।
  - देशों और समुदायों के बीच सांस्कृतिक संघर्ष में वृद्धि हुई है। इसी तरह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के बढ़ते उपयोग से भी जोखिम में वृद्धि हुई है।

भू-राजनीतिक जोखिमों के प्रभाव

- **सॉवरेन जोखिम:** सैन्य खर्च में बढ़ोतरी और आर्थिक मंदी के चलते कई देशों का सरकारी ऋण, उनके सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है। इससे उनकी वित्तीय स्थिरता पर संकट गहराता जा रहा है और बढ़ते कर्ज भार के कारण डिफॉल्ट (ऋण न चुकाने) होने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है।
- **वित्तीय खतरों की चपेट में अन्य देशों का आना:** भू-राजनीतिक जोखिम व्यापार और वित्तीय संबंधों के माध्यम से अन्य देशों में फैल सकते हैं। इससे विश्व के कई देश आर्थिक संकट की चपेट में आ सकते हैं।
- **मैक्रोइकॉनॉमिक प्रभाव:** जोखिमों के बढ़ने से आर्थिक व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। इनमें आपूर्ति श्रृंखला का बाधित होना और पूंजी का देश से बाहर निकलना जैसे आर्थिक व्यवधान शामिल हैं।
- **निवेशकों का विश्वास कम होना:** आमतौर पर भू-राजनीतिक जोखिम निवेशकों के विश्वास को कम करते हैं। इससे बाजार में अनिश्चितता और अस्थिरता बढ़ती है।
  - उदाहरण के लिए, अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध की वजह से हाल में **दोनों देशों के शेयर बाजारों में भारी गिरावट** दर्ज की गई।

भू-राजनीतिक जोखिमों से निपटने हेतु मुख्य नीतिगत सिफारिशें

- **वित्तीय स्थिति की निगरानी बढ़ाना:** नीति निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि देश-विशेष के भू-राजनीतिक जोखिमों पर लगातार नज़र रखी जाए और उनसे निपटने के लिए उपयुक्त नीतिगत उपाय अपनाए जाएं।
- **पूंजी भंडार बढ़ाना:** वित्तीय संस्थानों को भविष्य के जोखिमों से होने वाली हानियों से निपटने के लिए पर्याप्त मात्रा में पूंजी और लिक्विडिटी सुरक्षित रखनी चाहिए।
- **वित्तीय बाजारों को मजबूत करना:** उभरती अर्थव्यवस्थाओं को कठोर नियम बनाकर वित्तीय बाजारों को मजबूत और परिपक्व बनाना चाहिए ताकि वे भू-राजनीतिक संकटों से आसानी से निपट सकें।
- **मैक्रोइकॉनॉमिक बफर बनाए रखना:** आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकारों को खर्च बढ़ाने और कर कटौती जैसे राजकोषीय राहत देने के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही, किसी भी स्थिति से निपटने के लिए अधिक विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखना चाहिए।
- **संकट से निपटने के लिए तैयार रहना:** बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों से उत्पन्न वित्तीय अस्थिरता से निपटने के लिए मजबूत नीतिगत फ्रेमवर्क तैयार करना चाहिए।

डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती पर उनकी चिरस्थायी विरासत का उत्सव मनाया गया

14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती 'समानता दिवस' (Equality Day) के रूप में मनाई जाती है।

- इस दिवस के अवसर पर देश के लोग सामाजिक न्याय और विधि एवं समानता के क्षेत्र में **डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान को याद** करते हैं। यह दिवस **'एक आदर्श समाज के सिद्धांतों की प्राप्ति'** की प्रेरणा भी देता है।
- डॉ. अंबेडकर की रचना **'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट'** में उनके आदर्श समाज की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

डॉ. अंबेडकर की दृष्टि में आदर्श समाज:

- **समाज की अवधारणा:** अंबेडकर ने **अरस्तु** की इस धारणा को खारिज कर दिया था कि समाज एक अंतर्निहित और शाश्वत इकाई है। डॉ. अंबेडकर के अनुसार **समाज मानवीय संबंधों पर आधारित एक परिवर्तनशील व्यवस्था** है।
- **आदर्श समाज के लिए अंबेडकर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत:**
  - **प्रथम सिद्धांत:** व्यक्ति स्वयं में एक साध्य (लक्ष्य) है – अर्थात् समाज व्यक्ति से ऊपर नहीं है; बल्कि व्यक्ति के विकास के लिए ही समाज का अस्तित्व है।
  - **द्वितीय सिद्धांत:** समाज में लोगों के बीच संबंध **स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों पर आधारित** होने चाहिए (बॉक्स देखिए)।
  - **तृतीय सिद्धांत:** आदर्श समाज में **राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक न्याय संवैधानिक प्रावधानों एवं उपायों द्वारा सुनिश्चित** होना चाहिए।

आदर्श समाज की प्राप्ति के उपाय:

- **जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था का उन्मूलन:** तर्क और नैतिकता को सुधार के साधन के रूप में अपनाना चाहिए।
- **राज्य समाजवाद को अपनाना:** भूमि और प्रमुख उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना चाहिए ताकि **'एक व्यक्ति, एक संपत्ति (वैल्यू)'** सुनिश्चित की जा सके।
- **राजनीतिक समानता सुनिश्चित करना:** ऐसी व्यवस्था विकसित करनी चाहिए, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को **सत्ता में समान भागीदारी** प्राप्त हो।
- **संवैधानिक तरीकों का उपयोग:** सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधार के लिए हिंसा नहीं, बल्कि **संवैधानिक साधनों का सहारा** लेना चाहिए।

अंबेडकर की दृष्टि में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व

- **स्वतंत्रता:** दमन से मुक्ति और **अपनी पसंद की स्वतंत्रता** होनी चाहिए, जिसमें कहीं भी आने-जाने और कोई भी वृत्ति अपनाने की स्वतंत्रता भी शामिल है।
  - डॉ अंबेडकर ने जोर देकर कहा था कि **व्यक्ति को अपनी भूमिका या पेशा स्वयं चुनने का अधिकार** होना चाहिए अर्थात यह **जाति व्यवस्था के अनुसार जन्मजात नहीं** होनी चाहिए।
- **समानता:** यह समाज के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। भले ही अलग-अलग व्यक्तियों की क्षमता अलग-अलग हो, लेकिन **समानता यह सुनिश्चित करती है कि सभी को समान अवसर मिले और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा** हो सके।
- **बंधुत्व:** व्यक्तियों में **एकता की भावना** होनी चाहिए, जहां **अलग-अलग पृष्ठभूमियों के लोग स्वतंत्र रूप से संवाद करें, विचार साझा करें और सहयोग करें**। यह लोकतंत्र तथा सामाजिक एकता के लिए आवश्यक है।

खान मंत्रालय प्रोग्राम मैनेजमेंट यूनिट (PMU) स्थापित करने की योजना बना रहा है

खान मंत्रालय **जिला खनिज फाउंडेशन (DMF)/ प्रधान मंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना (PMKKKY)** की दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार के लिए PMU स्थापित करने की योजना बना रहा है।

जिला खनिज फाउंडेशन (DMF) के बारे में

- **खान और खनिज (विकास और विनियमन) (MMDR) अधिनियम, 1957** के तहत खनन गतिविधियों से प्रभावित सभी जिलों में DMF की स्थापना का प्रावधान किया गया है। DMF की स्थापना एक **गैर-लाभकारी निकाय** के रूप में की जाती है।
- **उद्देश्य:** खनन कार्यों से प्रभावित क्षेत्रों और व्यक्तियों के हितों की रक्षा करना तथा उनके सतत विकास और लाभ के लिए कार्य करना।
- **संरचना और कार्य:** राज्य सरकार द्वारा निर्धारित।
  - अब तक **23 राज्यों के 645 जिलों में DMF** स्थापित किए जा चुके हैं, जिन्होंने नियम बनाए हैं।
- **वित्त-पोषण तंत्र:** खनन पट्टा धारकों द्वारा दी गई रॉयल्टी का एक हिस्सा DMF को दिया जाता है।
- **फंड्स का उपयोग:** DMF के तहत जिला स्तर पर एकत्रित फंड्स का इस्तेमाल **PMKKKY के दिशा-निर्देशों के अनुसार** किया जाता है।
  - **PMKKKY के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:**
    - **विकासात्मक और कल्याणकारी परियोजनाओं/ कार्यक्रमों को लागू करना,**
    - **खनन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना/ समाप्त करना,** और
    - खनन क्षेत्रों में प्रभावित लोगों के लिए **स्थायी आजीविका** सुनिश्चित करना।
  - PMKKKY के तहत, पेयजल, प्रदूषण नियंत्रण, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, तथा महिलाओं और बच्चों के कल्याण जैसे **उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में कम-से-कम 70% फंड्स का उपयोग किया जाना निर्धारित है।**

जिला खनिज फाउंडेशन (DMF) में सुधार की आवश्यकता क्यों?

- **फंड्स का कम उपयोग:** फंड्स के अनुचित आवंटन और उपयोग की वजह से उपलब्ध राशि का आधे से अधिक हिस्सा खर्च नहीं हो पाया है।
- **फंड्स का गलत आवंटन:** प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के बजाय अवसंरचना परियोजनाओं में फंड्स का बड़ा हिस्सा खर्च किया जा रहा है।
- **गवर्नेंस से जुड़ी समस्याएं:** ज्यादातर DMFs जिला कलेक्ट्रेट के अधीन एक प्रशासनिक इकाई की तरह कार्य करते हैं। इसके कारण DMFs में प्रभावित समुदायों की पर्याप्त भागीदारी नहीं हो पाती है।
- **असुनियोजित निवेश योजना:** किसी भी DMF ने अब तक सुनियोजित वार्षिक योजना नहीं बनाई है।

अन्य सुर्ख़ियां

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य

चीता परियोजना संचालन समिति ने कूनो राष्ट्रीय उद्यान से कुछ **चीतों को गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में स्थानांतरित** करने को मंजूरी दी।

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य के बारे में

- **भौगोलिक:** गांधी सागर वन्यजीव अभ्यारण्य **पूर्वी मध्य प्रदेश** में स्थित है। यह मध्य प्रदेश के दो जिलों यानी **मंदसौर और नीमच** में फैला हुआ है।
  - इस क्षेत्र को **निमाड़ क्षेत्र** के नाम से भी जाना जाता है।
- **प्रकार:** इस अभयारण्य के वन **खटियार-गिर शुष्क पर्णपाती वन** का हिस्सा हैं।
- **नदी:** इससे होकर **चम्बल नदी** गुजरती है।
- **बांध:** यह अभयारण्य **गांधी सागर बांध** के कारण बने जलाशय के आसपास के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- **वृक्ष:** सलाई, करधई, धावड़ा, तेंदू, पलाश आदि।
- **वन्य जीव:** जंगली कुत्ते (ढोल), चिंकारा, तेंदुआ, ऊदबिलाव, मगरमच्छ आदि।
- **ऐतिहासिक:** यह विश्व प्रसिद्ध **चतुर्भुजनाथ नाला शैलाश्रयों** का हिस्सा है।

बोनोबो (Bonobo)

बोनोबो के बीच वोकल कम्युनिकेशन (आवाज़ के द्वारा संवाद) मानव भाषा की तरह ही संरचनाशीलता को दर्शाता है।

- **संरचनाशीलता** भाषा की वह क्षमता है, जिसके द्वारा हम अर्थपूर्ण इकाइयों (जैसे शब्द या प्रत्यय) को मिलाकर बड़ी संरचनाएँ (जैसे वाक्यांश या वाक्य) बनाते हैं, और इन बड़ी संरचनाओं का अर्थ उन इकाइयों के अर्थ और उनके आपस में जुड़ने के तरीके से निर्धारित होता है।

बोनोबो के बारे में

- बोनोबोस और चिम्पांजी दोनों का **98.7% DNA मानव DNA से मेल खाता है।** इससे ये दोनों प्रजातियां हमारे सबसे करीबी जीवित रिश्तेदार बन जाते हैं।
- **शारीरिक विशेषता: ये चिंपैंजी की तुलना में** आमतौर पर आकार में **छोटे, दुबले और गहरे रंग** के होते हैं।
- **विशेषताएं:** बोनोबो समूह **अधिक शांतिपूर्ण** होते हैं और उनका **नेतृत्व मादाएं** करती हैं।
- **पर्यावास: केवल कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC)** के वनों में।
- **IUCN रेड लिस्ट: एंडेंजर्ड।**

बैटइकोमोन (BatEchoMon)

बैट इकोलोकेशन मॉनिटरिंग का संक्षिप्त नाम बैटइकोमोन है। यह **भारत की पहली स्वचालित चमगादड़ निगरानी प्रणाली** है। इसे **इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर ह्यूमन सेटलमेंट्स, बेंगलुरु** में विकसित किया गया है।

बैटइकोमोन (BatEchoMon) के बारे में

- यह एक **स्वचालित प्रणाली** है, जो रियल टाइम में **चमगादड़ों की आवाज का पता लगाने और उसका विश्लेषण** करने में सक्षम है।
- यह **बैट डिटेक्टर** के रूप में कार्य करती है, जो एक विशेष रिकॉर्डिंग उपकरण है। यह प्रणाली **कीटभक्षी चमगादड़ों की अल्ट्रासोनिक इकोलोकेशन कॉल या आवाज को मनुष्यों के लिए श्रव्य ध्वनियों में परिवर्तित** कर सकती है।
  - इसमें **रास्पबेरी पाई माइक्रोप्रोसेसर और कन्वॉल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क एल्गोरिदम** का उपयोग किया गया है, जो इकोलोकेशन कॉल्स के माध्यम से चमगादड़ों की प्रजातियों का पता लगाने और उन्हें पहचानने में मदद करता है।

डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क (ONDC)

नए CEO के पदभार ग्रहण करने तक ONDC को **अंतरिम कार्यकारी समिति के 8 सदस्य मिलेंगे।**

ONDC के बारे में

- **मंत्रालय: उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग** (DPIIT), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।
- **उद्देश्य:** एक ओपन ई-कॉमर्स नेटवर्क को बढ़ावा देना, जो **खरीदारों, प्लेटफॉर्म्स और खुदरा विक्रेताओं को डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के तहत आपस में जोड़ता है।**
- **अवधारणा:** ONDC **ओपन-सोर्स पद्धति पर आधारित** है, जिसमें किसी विशिष्ट प्लेटफॉर्म से स्वतंत्र मुक्त विनिर्देशों और खुले नेटवर्क प्रोटोकॉल का उपयोग किया जाएगा।
- **महत्त्व:** ONDC परिचालनों को मानकीकृत करेगा; स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं के समावेशन को बढ़ावा देगा; लॉजिस्टिक्स में दक्षता लाएगा और उपभोक्ताओं के लिए लाभकारी होगा।

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE)

BEE फर्जी स्टार रेटिंग को रोकने के जरिये **मानक एवं लेबलिंग कार्यक्रम को तेजी से लागू** कर रहा है।

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) के बारे में

- इसे **ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001** के तहत **वैधानिक निकाय** के रूप में स्थापित किया गया है।
- **मंत्रालय: विद्युत मंत्रालय** के अधीन स्थापित।
- **उद्देश्य:** भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊर्जा तीव्रता को कम करना।
- **विनियामक कार्य:**
  - मानक और लेबलिंग के अंतर्गत उपकरणों एवं अप्लायंस के लिए न्यूनतम ऊर्जा प्रदर्शन मानक विकसित करना।
  - वाणिज्यिक भवनों के लिए न्यूनतम ऊर्जा प्रदर्शन मानक विकसित करना।
  - निर्धारित उपभोक्ताओं के लिए ऊर्जा उपभोग मानदंड विकसित करना।

मेनिनजाइटिस

WHO ने मेनिनजाइटिस के निदान, इलाज और देखभाल के लिए पहली बार दिशा-निर्देश जारी किए।

- ये दिशा-निर्देश 2020 में लॉन्च किए गए **"डीफिटिंग मेनिनजाइटिस बाय 2030" ग्लोबल रोडमैप** में योगदान देंगे।

मेनिनजाइटिस के बारे में

- यह **मस्तिष्क और मेरुदंड को घेरने वाले ऊतकों की सूजन है।** यह एक गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य समस्या है।
- यह बीमारी **संक्रामक या गैर-संक्रामक** दोनों हो सकती है। संक्रमण **बैक्टीरिया, वायरस, फंगस या परजीवियों** के कारण हो सकता है।
- **संचरण:** यह बीमारी अलग-अलग जीवाणुओं के अनुसार अलग-अलग तरीके से फैलती है। ज्यादातर बैक्टीरिया जैसे **मेनिनकोकस, न्यूमोकोकस और हीमोफिलस इन्फ्लुएंजा मनुष्य की नाक एवं गले** में पाए जाते हैं तथा वहीं से फैलते हैं।
- **रोकथाम:** सामान्य बैक्टीरियल मेनिनजाइटिस के लिए वैक्सीन उपलब्ध हैं। **एंटीबायोटिक्स** से भी इलाज संभव है।

क्यू-शील्ड

स्टार्ट-अप **QNu Labs** ने दुनिया का पहला अनूठा प्लेटफॉर्म क्यू-शील्ड लॉन्च किया।

क्यू-शील्ड के बारे में

- **अवधारणा:** यह प्लेटफॉर्म किसी भी परिवेश में **(जैसे क्लाउड, ऑन-प्रीमाइसेस या हाइब्रिड सिस्टम) में क्रिप्टोग्राफी** को आसानी से प्रबंधित करने की सुविधा देता है।
- **महत्त्व:**
  - यह **डेटा को ट्रांसफर करते समय और स्टोरेज में भी पूरी तरह से सुरक्षित** रखने का समाधान प्रदान करता है।
  - यह कंपनियों को उनकी **महत्वपूर्ण अवसंरचना** की सुरक्षा करने की क्षमता प्रदान करता है।
    - **महत्वपूर्ण अवसंरचना** से तात्पर्य उन क्षेत्रकों से है, जिनमें कोई भी बाधा या खतरा उत्पन्न होने से **राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था** आदि पर गंभीर असर पड़ सकता है।
    - **जैसे संचार क्षेत्रक, ऊर्जा क्षेत्रक आदि।**

ESA का बायोमास

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) अपना बायोमास मिशन लॉन्च करने जा रही है।

बायोमास मिशन के बारे में

- इसमें एक एकल **LEO (निम्न भू-कक्षा) उपग्रह प्लेटफॉर्म** होगा, जिसमें **SAR (सिंथेटिक एपर्चर रडार)** नामक उपकरण लगाया जाएगा।
- बायोमास **पहला ऐसा उपग्रह** होगा, जो **P-बैंड SAR** ले जा रहा है। यह एक अभिनव उपकरण है, जो **वनों के वितान में प्रवेश कर वृक्षों के तनों, शाखाओं और जड़ों तक की जानकारी प्राप्त** कर सकता है। गौरतलब है कि वृक्षों के इन्हीं हिस्सों में मुख्य रूप से **कार्बन संग्रहित** होता है।
- इस मिशन का उद्देश्य **दुनिया के वनों का मानचित्र तैयार** करना है। इससे पहली बार **वैश्विक स्तर पर वन बायोमास और संग्रहित कार्बन का पता** लगाया जा सकता है।

सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व

चेत्तूर शंकरन नायर (1857-1934)

प्रधान मंत्री ने **चेत्तूर शंकरन नायर** को याद किया। उन्होंने **पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर** पर जलियांवाला बाग हत्याकांड, 1919 का आरोप लगाया था, जिसकी वजह से **ओ'डायर ने इन पर मानहानि का केस** किया था।

चेत्तूर शंकरन नायर के बारे में

- वे **मद्रास हाई कोर्ट के स्थायी न्यायाधीश** रहे थे और **1902 में रैले विश्वविद्यालय आयोग** के सचिव बनाए गए थे।
- वे **1915 में वायसराय की परिषद् के सदस्य** बने थे और **शिक्षा विभाग** की जिम्मेदारी संभाली थी।
- 1897 में अमरावती अधिवेशन में वे भारतीय **राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष** बने थे।
- **सामाजिक सुधार:** उन्होंने **बुद्धसना बनाम फातिमा वाद (1914)** में निर्णय दिया था कि जिन लोगों ने हिंदू धर्म अपना लिया है, उन्हें बहिष्कृत नहीं माना जा सकता।
  - अन्य मामलों में उन्होंने **अंतर्जातीय और अंतर्धार्मिक विवाहों का समर्थन** किया था।
- **साहित्यिक कार्य:** गांधी और अराजकता, मद्रास रिव्यू, मद्रास लॉ जर्नल आदि।